{ एत्थ मोहणीयस्स णाणागुणहाणिसलागाओ पलिदोवमस्स किंचूणद्धच्छेदणयमेत्ताओ। तं कधं णव्वदे? चरिमगुणहाणिदव्वादो पढमणिसेयो असंखेज्जगुणो त्ति पदेसविरइयअप्पाबहुगादो। णाणावरणादीणं पुण णाणागुणहाणिसलागाओ पलिदोवमपढमवग्गमूलअद्धच्छेदणेहिंतो थोवाओ। कुदो? एदाओ विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे असंखेज्जपलिदोवमबिदिय**(ता प्रतौ 'पलिदोवमस्स बिदिय' इति पाठः।)वग्गमूलुप्पत्तीदो। तं पि कुदो णव्वदे? मोहणीयणाणागुणहाणिसलागाणं दो-तिण्णि-सत्तभागेसु विसेसाहियबिदियवग्गमूलछेदाणुवलंभादो। }

< यहाँ मोहनीयकी नानागुणहानिशलाकाएं पल्योपमके कुछ कम अर्धच्छेदोंके बराबर है।

शंका -- वह कैसे जाना जाता है?

समाधान -- वह 'अन्तिम गुणहानिके द्रव्यसे प्रथम निषेक असंख्यातगुणा है' इस प्रदेशविरचित अल्पबहुत्वसे जाना जाता है।

परन्तु ज्ञानावरणादिकोंकी नानागुणहानिशलाकाएँ पल्योपमसम्बन्धी प्रथम वर्गमूलके अर्थच्छेदोंसे स्तोक हैं, क्योंकि, इनका विरलन कर द्विगुणित करके परस्पर गुणा करनेपर पल्योपमके असंख्यात द्वितीय वर्गमूल उत्पन्न होते हैं।

शंका -- वह भी कहाँसे जाना जाता है?

समाधान -- चूँकि मोहनीयकी नानागुणहानिशलाकाओंके दो-तीन-सात भागोंमें विशेष अधिक द्वितीय वर्गमूलके अर्धच्छेद पाये जाते हैं, अतः इसीसे उसने द्वितीय वर्गमूलोंकी उत्पत्तिका ज्ञान होता है। >

{ णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि।।११४।। }

< नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक हैं।।११४।।>

{ कुदो? थोवूणपलिदोवमद्धच्छेदणयपमाणत्तादो थोवूणपलिदोवमपढमवग्गमूलच्छेदणयमेत्तादो। >

<	कारण यह कि वे पल्योपमके कुछ कम अर्धच्छेदोंके बराबर होनेसे पल्योपमके प्रथम वर्गमूलके अर्धच्छेदोंसे कुछ कम हैं।	>

{	एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं।।११५।।	}

<	एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है।।११६।।>

{	को गुणगारो? असंखेज्जाणि पलिदोवमपढमवग्गमूलाणि।	}

<	गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूल है।	>

{	पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणमपज्जत्तयाणं चउरिंदिय-तीइंदिय-बीइंदिय-एइंदिय-बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तयाणं सत्तण्णं कम्माणमाउववज्जाणं जं पढमसमए पदेसग्गं तदो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं गंतूण दुगुणहीणा, एवं दुगुणहीणा दुगुणहीणा जाव उक्कस्सिया ट्ठिदि त्ति	।।११६।।	}

<	संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय तथा एकेन्द्रिय बादर व सूक्ष्म इन पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके आयुको छोड़ शेष सात कर्मोंका जो प्रदेशाग्र प्रथम समयमें है उससे पल्योपमके असंख्यातवें भाग जाकर वह दुगुणहीन हो जाता है, इस प्रकार उत्कृष्ट स्थिति तक वह दुगुणहीन दुगुणहीन होता जाता है।	>

{	एत्थ जधा सण्णिपज्जत्तणाणावरणादीणं परूवणा कदा तधा कायव्वा। णवरि एत्थ अप्पणो ट्ठिदीणं पमाणं जाणिदूण वत्तव्वं।}

< यहाँ जैसे संज्ञी पर्याप्तकके ज्ञानावरणादिकोंकी प्ररूपणा की गयी है वैसे ही करना चाहिये। विशेषता इतनी है कि यहाँ अपनी स्थितियोंका प्रमाण जानकर कहना चाहिये। >

{ एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जाणि पलिदोवमवग्गमूलाणि।।११७।। }

< एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके असंख्यात वर्गमूलोंके बराबर है।।११७।। >

{ सुगममेदं। }

< यह सूत्र सुगम है। >

{ णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पलिदोवमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागो।।११८।। }

< नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके वर्गमूलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है ।।११८।। >

{ एदं पि सुगमं। }

< यह सूत्र भी सुगम है। >

{ णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि थोवाणि।।११९।। }

< नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर स्तोक हैं।।११९।।>

{ गुणहाणिणा कम्मट्ठिदीए ओवट्टिदाए तेसिमुप्पत्तिदंसणादो। }

< कारण कि गुणहानि द्वारा कर्मस्थितिको अपवर्तित करनेपर उनकी उत्पत्ति देखी जाती है। >

{ एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं।।१२०।। }

< एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है।।१२०।।>

{ को गुणगारो? असंखेज्जाणि पलिदोवमवग्गमूलाणि। एवं परंपरोवणिधा समत्ता। }

< गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमके असंख्यात वर्गमूल हैं। इस प्रकार परम्परोपनिधा समाप्त हुई। >

{ संपहि सेढिपरूवणाए सूचिदाणमवहार-भागाभाग-अप्पाबहुअणुयोगद्दाराणं परूवणं कस्सामो। तं जहा -- सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं पढमाए ट्ठिदीए पदेसपमाणेण केवचिरेण कालेण अवहरिज्जदि? दिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहरिज्जदि। एदस्स कारणं वुच्चदे। तं जहा -- बिदियादिगुणहाणिदव्वे पढमगुणहाणिदव्वपमाणेण कदे चरिमगुणहाणिदव्वेणूणपढमगुणहाणिदव्वं होदि। तस्स पमाणमेदं २४०। २२५ । २१०। १९५। १८०। १६५। १५०। १३५। चरिमगुणहाणिदव्वपमाणमेदं १६। १५। १४। १३। १२। ११। १०। ९। एदम्मि दव्वे पुव्वदव्वम्मि पक्खित्ते पढमगुणहाणिदव्वपमाणं होदि। २५६। २४०। २२४। २०८। १९२। १७६। १६०। १४४। पुणो एदं पढमगुणहाणिदव्वं दोखंडे कादूण तत्थ एगखंडमधोसिरं करिय बिदियखंडपासे ठविदे एत्तियं होदि ।२००।२००।२००।२००।२००।२००।२००।२००। एदस्स पमाणं पढमणिसेयस्स तिण्णि-चदुब्भागा सादिरेया। पुणो एत्थ सादिरेये अवणिदे सुद्धा पढमणिसेयस्स तिण्णि-चदुब्भागा चेव चेट्ठंति। तेसिं पमाणमेदं १९२। १९२। १९२। १९२। १९२। १९२। १९२। १९२। सादिरेयं पि एदं ८। ८। ८। ८। ८। ८। ८। ८। पढमगुणहाणिदव्वे वि

समकरणे कीरमाणे पढमणिसेगस्स तिण्णिचदुब्भागा सादिरेया होंति। पुणो तेसु चदुब्भागे अवणिदे सेसं बे-चदुब्भागपमाणमेत्तिय होदि १२८। १२८। १२८। १२८। १२८। १२८। १२८। १२८। सेसचदुब्भागपमाणमेदं ६४। ६४। ६४। ६४। ६४। ६४। ६४। पुणो एदं चदुब्भागं घेत्तूण पुव्विल्लतिण्णि-चदुब्भागेसु पक्खित्ते गुणहाणिमेत्तपढमणिसेया होंति। तेसिं पमाणमेदं २५६। २५६। २५६। २५६। २५६। २५६। २५६। २५६। पुणो पढमणिसेयस्स अद्धाणि गुणहाणिमेत्ताणि अत्थि। ताणि पढमणिसेयपमाणेण कदे गुणहाणीए अद्धमेत्ता पढमणिसेयपमाणेण कदे गुणहाणीए अद्धमेत्ता पढमणिसेया होंति। तेसिं पमाणमेदं २५६। २५६। २५६। २५६। पुणो एदे ** (ता प्रतौ 'एदेण' इति पाठः।) गुणहाणिअद्धमेत्तपढमणिसेगे घेत्तूण गुणहाणिमेत्तपढमणिसेगेसु पक्खित्तेसु दिवड्ढगुणहाणिमेत्तपढमणिसेया होंति। २५६। १२। पुणो सेसअधियदव्वे वि पढमणिसेयपमाणेण कदे तस्सद्धमेत्तं होदि १२८। पुणो एदमप्पहाणं कादूण पढमणिसेगेण दिवड्ढगुणहाणीए गुणिदाए सव्वदव्वमेत्तियं होदि ३०७२। पुणो एदम्हि ** (ता प्रतौ 'एदं' इति पाठः।) दिवड्ढगुणहाणीए १२। भागे हिदे पढमणिसेयो आगच्छदि। एवं ** (प्रतिषु 'एदं' इति पाठः।) पढमणिसेयपमाणेण सव्वदव्वं दिवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहरिज्जदि त्ति सिद्धं। }

< अब श्रेणिप्ररूपणा द्वारा सूचित अवहार, भागाभाग और अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- सब स्थितियोंका प्रदेशपिण्ड प्रथम स्थितिके प्रदेशपिण्डके प्रमाण द्वारा कितने कालसे अपहृत होता है? उक्त प्रमाणके द्वारा वह डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। इसका कारण बतलाते हैं। वह इस प्रकार है -- द्वितीयादिक गुणहानियोंके द्रव्यको प्रथम गुणहानिका द्रव्य होता है। उसका प्रमाण यह है

*

*

अन्तिम गुणहानिके द्रव्यका प्रमाण यह है। इस द्रव्यको पूर्व द्रव्यमें मिलानेपर प्रथम गुणहानिके द्रव्यका प्रमाण होता है। (संदृष्टिमें देखिये।) पुनः प्रथम गुणहानिके इस द्रव्यके दो खण्ड करके एक खण्डको अधःशिर करके द्वितीय खण्डके पार्श्वमें स्थापित करनेपर इतना है -- २००+ २००+ २००+ २००+ २००+ २००+ २००+ २०० = १६००। इसका प्रमाण प्रथम निषेकके तीन चतुर्थ भाग (३/४) से कुछ (८) अधिक होता है। इसमेंसे अधिकताके प्रमाणको कम कर देनेपर

अवशिष्ट प्रथम निषेकके शुद्ध तीन चतुर्थ भाग ही रहते हैं -- (२०० - ८ =) १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, १९२, साधिकताका भी प्रमाण यह है -- ८, ८, ८, ८, ८, ८, ८, ८। प्रथम गुणहानिके द्रव्यका भी समकरण करनेपर (१६००/८ = २००) वह प्रथम निषेकके साधिक (८) तीन चतुर्थ प्रमाण होता है। फिर उनमेंसे एक चतुर्थ भागको अलग कर देनेपर शेष दो चतुर्थ भागोंका प्रमाण इतना होता है -- १९२ - ६४ = १२८ = २५६x२/४) १२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८। अवशेष चतुर्थ भागका प्रमाण यह है -- ६४, ६४, ६४, ६४, ६४, ६४, ६४, ६४। अब इस चतुर्थ भागको ग्रहण करके पूर्वके तीन चतुर्थ भागोंमें मिला देनेपर गुणहानिके बराबर प्रथम निषेक होते हैं। उनका प्रमाण यह है (१९२+६४ = २५६, २५६, २५६, २५६, २५६, २५६, २५६, २५६। प्रथम निषेकके अर्ध भाग गुणहानिके बराबर अर्थात् आठ हैं (१२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८, १२८)। उनको प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर गुणहानिके अर्ध भाग प्रमाण प्रथम निषेक होते हैं। उनका प्रमाण यह है -- २५६, २५६, २५६, २५६। पश्चात् गुणहानिके अर्ध भाग प्रमाण इन प्रथम निषेकोंको ग्रहण करके गुणहानिके बराबर प्रथम निषेकोंमें मिला देनेपर डेढ़ गुणहानि प्रमाण प्रथम निषेक होते हैं -- २५६x१२। अवशिष्ट अधिक द्रव्यको भी प्रथम निषेकके प्रमाणसे करनेपर वह उसके अर्ध भागके बराबर होता है १२८। अब इसको गौण करके प्रथम निषेकसे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर सब द्रव्य इतना होता है -- २५६x१२ = ३०७२। इसमें डेढ़ गुणहानिका (१२) भाग मिला देनेपर प्रथम निषेक प्राप्त होता है। इस प्रकार प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्य डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है, यह सिद्ध होता है। >

{ बिदियाए ट्ठिदीए पदेसग्गपमाणेण सव्वट्ठिदिपदेसग्गं केवचिरेण कालेण अवहरिज्जदि? सादिरेयवड्ढगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण। तं जहा -- दिवड्ढगुणहाणीयो विरलेदूण सव्वदव्वं समखण्डं कादूण दिण्णे एक्केक्कस्स रूवस्स पढमणिसेयपमाणं पावदि। पुणो हेट्ठा णिसेगभागहारं विरलेदूण उवरिमेगरूवधरिदं समखंडं कादूण दिण्णे विरलणरूवं पडि एगेग-गोवुच्छविसेसपमाणं पावदि। पुणो एदेण पमाणेण उवरिमसव्वरूवधरिदेसु अवणिदेसु दिवड्ढगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसा अधिया होंति। पुणो उवरिददव्वं ** (आ प्रतौ 'उवरिददव्वं', ता प्रतौ 'उवरि दव्वं' इति पाठः।) पि दिवड्ढगुणहाणिमेत्तबिदियणिसेयपमाणं होदि। पुणो

अधियगोवुच्छविसेसे बिदियणिसेयपमाणेम कस्सामो। तं जहा -- १६। १५। १। १६। १२ रूवूणणिसेयभागहारमेत्तगोवुच्छविसेसे घेत्तूण जदि एगं बिदियणिसेयपमाणं लब्भदि, तो दिवड्ढगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए संदिट्ठीए चत्तारि पंचभागा होंति ४। ५। पुणो एदं दिवड्ढगुणहाणीसु सरिसच्छेदं ** (ता प्रतौ 'सरिच्छेदं' इति पाठः।) कादूण पक्खित्ते एत्तियं होदि ६४। ५। पुणो एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे बिदियणिसेगो आगच्छदि। }

< द्वितीय स्थति सम्बन्धी प्रदेशाग्रके प्रमाणसे सब स्थितियोंका प्रदेशपिण्ड कितने कालसे अपहृत होता है? वह साधिक डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। यथा -- डेढ़ गुणहानियोंको विरलित करके सब द्रव्यको समखण्ड करके देनेपर एक एक अंकके प्रति प्रथम निषेकका अंक प्राप्त होता है (३०७२/१२ = २५६)। इसके नीचे निषेकभागहारका विरलन कर उपरिम एक अंकके प्रति प्राप्त राशिको समखण्ड करके देनेपर विरलन अंकके प्रति एक एक गोपुच्छविशेषका प्रमाण प्राप्त होता है (२५६/१६ = १६)। इस प्रमाणसे ऊपरकी सब एक अंकके प्रति प्राप्त राशियोंका अपनयन करनेपर डेढ़ गुणहानिप्रमाण गोपुच्छविशेष अधिक होते हैं (१६x१२ = १९२)। अवशिष्ट द्रव्य भी डेढ़ गुणहानि मात्र द्वितीय निषेकके बराबर होता है (२४०x१२ = २८८०)।

अब अधिक गोपुच्छविशेषोंको द्वितीय निषेकके प्रमाणसे करते हैं। यथा -- एक कम निषेकभागहार प्रमाण गोपुच्छविशेषोंको ग्रहण कर यदि एक द्वितीय निषेकका प्रमाण पाया जाता है, तो डेढ़ गुणहानि प्रमाण गोपुच्छविशेषों में कितना द्वितीय निषेकका प्रमाण प्राप्त होगा, इस प्रकार फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर वह पाँच भागोंमेंसे चार भाग (४/५) प्रमाण होता है।

उदाहरण -- यहाँ निषेकभागहारका प्रमाण १६ और गोपुच्छविशेषका प्रमाण भी १६ है; अतः निम्न प्रकार त्रैराशिक करनेपर उपर्युक्त प्रमाण प्राप्त होता है -- १२x१/१५ = ४/५ (२४०x४/५) = १९२।

पुनः इसको समच्चछेद करके डेढ़ गुणहानियोंमें मिलानेपर इतना होता है --१२+४/५ = ६४/५। इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय निषेक प्राप्त होता है -- ३०७२/ ६४/५ = २४०।

>

{ तदियाए ड्डिदीए पदेसग्गपमाणेण सव्वड्डिदिपदेसग्गं केवचिरेण कालेण अवहरिज्जदि? सादिरेयरूवाहियदिवड्ढगुणहाणिड्डाणंतरेण कालेण अवहरिज्जदि १६। १४। १। १६। २४। दोरूवूणणिसेयभागहारमेत्तगोवुच्छविसेसेहिंतो जदि एगं तदियणिसेयपमाणं लब्भदि तो तिण्णिगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसेसु केवडिए तदियणिसेगे लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एत्तियं होदि १। ५। ७। पुणो एदम्मि दिवड्ढगुणहाणिम्मि पक्खित्ते एत्तियं होदि ९६ । ७। पुणो एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे तदियणिसेयो आगच्छदि। एवं जाणिदूण उवरि णेदव्वं जाव पढमगुणहाणीए अद्धं गदं ति। }

< तृतीय स्थिति सम्बन्धी प्रदेशाग्रप्रमाणसे सब स्थितियोंका प्रदेशपिण्ड कितने कालसे अपहृत होता है? वह साधिक एक अंकसे अधिक डेढ़ गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। दो रूपोंसे कम निषेकभागहार प्रमाण गोपुच्छविशेषोंमेंसे यदि एक तृतीय निषेक प्राप्त होता है तो तीन गुणहानियोंके बराबर गोपुच्छविशेषोंमें कितने तृतीय निषेक प्राप्त होंगे, इस प्रकार फलगुणित इच्छामें प्रमाणका भाग देनेपर इतना होता है --

उदाहरण -- निषेकभागहार१६; गोपुच्छ १६; १६-२ = ; २४x१/१४ = १ ५/७ ।

इसको डेढ़ गुणहानियोंमें मिला देनेपर इतना होता है -- १२+१२/७ = ९६/७। अब इसका समस्त द्रव्यमें भाग देनेपर तृतीय निषेक आता है -- ३०७२/ ९६/७ = २२४। इस प्रकार जानकर प्रथम गुणहानिका अर्ध भाग समाप्त होने तक ले जाना चाहिये। >

[पुणो उवरिमणिसेयपमाणेण सव्वड्डिदिपदेसग्गं केवचिरेण कालेण अवहरिज्जदि? बेगुणहाणिड्डाणंतरेण कालेण। तं जहा -- दिवड्ढगुणहाणिखेत्तं पढमणिसेगविक्खभेण चत्तारि फालीयो कादूण पुणो तत्थ चउत्थफालिं घेत्तूण गुणहाणिअद्धपमाणेण तिण्णि खंडाणि कादूण परावत्तिय तिण्णं फालीणं पासे ठविदेसु बेगुणहाणीयो होंति == अथवा, तेरासियकमेण

आणेदव्वं। तं जहा -- १६। १२। १। १६। १२। ४। णिसेयभागहारस्स तिण्णि-चदुब्भागमेत्तविसेसे घेत्तूण जदि एगं तदित्थणिसेयपमाणं लब्भदि तो आयामेण दिवड्ढिगुणहाणिविक्खंभेण णिसेयभागहारचदुब्भागमेत्तविसेसेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए गुणहाणीए अद्धमागच्छदि ४। पुणो एदम्मि दिवड्ढगुणहाणिम्मि पक्खित्ते दोगुणहाणीयो भवंति १६। पुणो एदाहि सव्वदव्वे भागे हिदे तदित्थणिसेयो आगच्छदि। तदुवरि भागहारे वुच्चमाणे सादिरेय-बे-गुणहाणीयो वत्तव्वाओ। एवं णेदव्वं जाव पढमगुणहाणिचरिमसमओ त्ति। पुणो बिदियगुणहाणिपढमणिसेयपमाणेण सव्वदव्वे अवहरिज्जमाणे केवचिरेण कालेण अवहरिज्जदि? तिण्णि गुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण। तं जहा -- दिवड्ढगुणहाणिक्खेत्तं ठविय = = अद्धेण पडिय बिदियअद्धस्सुवरि ठविदे तिण्णिगुणहाणीयो होंति। अधवा, दिवड्ढगुणहाणीयो ठवेदूण एगगुणहाणिं चडिय इच्छामो त्ति एगरूवं विरलिय बिगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे उप्पण्णरासिणा दिवड्ढगुणहाणीयो होंति। २४। पुणो एदाहि सव्वदव्वे भागे हिदे बिदियगुणहाणीए पढमणिसेगो आगच्छदि। }

< उससे अग्रिम निषेकके प्रमाणसे सब स्थितियोंका प्रदेशाग्र कितने कालमें अपहृत होता है? उक्त प्रमाणसे वह दोगुणहानिकालान्तरसे अपहृत होता है। यथा -- डेढ़ गुणहानिमात्र क्षेत्रकी प्रथम निषेकके विस्तारप्रमाणसे चार फालियाँ करके पश्चात् उनमेंसे चतुर्थ फालिको ग्रहण कर गुणहानिके अर्ध प्रमाण तीन खण्ड करके परिवर्तनपूर्वक तीन फालियोंके पार्श्व भागमें स्थापित करनेपर दो गुणहानियाँ होती हैं। (संदृष्टि मूलमें देखिये।)

अथवा त्रैराशिकसे इसे ले आना चाहिये । यथा निषेकभागहारके तीन चतुर्थ भाग मात्र विशेषोंको ग्रहण करके यदि वहाँके एक निषेकका प्रमाण पाया जाता है, तो आयाम (?) व डेढ़ गुणहानि विष्कम्भसे निषेकभागहारके चतुर्थ भाग मात्र विशेषोंमें वह कितना प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणके फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर गुणहानिका अर्ध भाग आता है। ((१६x१२x४)x१/(१६x१२) = ४)

फिर इसको डेढ़ गुणहानियोंमें मिलानेपर दो गुणहानियाँ (१६) होती हैं। इनका कथन सब द्रव्यमें भाग देनेपर वहाँके निषेकका प्रमाण लब्ध होता है। उससे आगेके भागहारका कथन

करनेपर साधिक दो गुणहानियाँ कहना चाहिये। इस प्रकार प्रथम गुणहानिके अन्तिम समयतक ले जाना चाहिये।

द्वितीय गुणहानि सम्बन्धी प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह कितने कालसे होता है? उक्त प्रमाणसे वह तीन गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। यथा -- डेढ़ गुणहानि प्रमाण क्षेत्रको स्थापित करके (संदृष्टि मूलमें देखिये।) अर्ध भागसे फाड़कर द्वितीय अर्ध भागके ऊपर रखनेपर तीन गुणहानियाँ होती हैं। अथवा, डेढ़ गुणहानियोंको स्थापित करके चूँकि एक गुणहानि चढ़े हैं, अतः एक रूपका विरलन करके द्विगुणित कर परस्परमें गुणित करनेपर उत्पन्न राशिसे डेढ़ गुणहानिको गुणित करनेपर तीन गुणहानियाँ (२४) होती हैं। अब इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेक आता है। >

{ पुणो तिस्से चेव बिदियणिसेगपमाणेण सव्वदव्वं सादिरेयतिण्णिगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहरिज्जदि। तं जहा -- ८। १५। १। ८। २४ ** (अ प्रतौ संदृष्टिरियमग्रे '--भागहारमेत्त' इत्यतः पश्चादुपलभ्यते।) रूवूणणिसेयभागहारमेत्तगोवुच्छविसेसे घेत्तूण जदि एगपक्खेवसलागा लब्भदि तो तिण्णिगुणहाणिमेत्तगोवुच्छविसेसेहिंतो केवडियाओ पक्खेवसलागाओ लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एत्तियं होदि ८। ५। पुणो एदम्मि सरिसच्छेदं कादूण तिसु ** (ता प्रतौ 'तीसु' इति पाठः।) गुणहाणीसु पक्खित्ते एत्तियं होदि १२८। ५। पुणो एदेण सव्वदव्वे भागे हिदे बिदियणिसेयो आगच्छदि। एवं (णेदव्वं) जाव बिदियगुणहाणीए अद्धं गद्धं ति। तदो तण्णिसेयपमाणेण सव्वदव्वे अवहरिज्जमाणे चत्तारिगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहरिज्जदि। तं जहा -- तिण्णिगुणहाणिक्खेत्तं ठविय पुव्वं व चत्तारिफालीयो कादूण तत्थ तीहि फालिहि तदित्थणिसेओ होदि त्ति चउत्थफाली अधिया होदि। पुणो इममहियफालिं तप्पमाणेण कस्सामो -- ८। १२। १। ८। ४। २४। णिसेगभागहारतिण्णि-चदुब्भागमेत्तगोवुच्छविसेसे घेत्तूण जदि एगो तदित्थणिसेगो लब्भदि तो एगफालिमेत्तगोवुच्छविसेसेसु किं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदिच्छाए ओवट्टिदाए एत्तियं होदि ८। पुणो एदम्मि तिसु ** (ता प्रतौ 'तीसु' इति पाठः।) गुणहाणीसु पक्खित्ते चत्तारिगुणहाणीयो होंति ३२। पुणो एदेण सव्वदव्वे ** (प्रतिषु 'लोएदूण' इति पाठः।) भागे हिदे तदित्थणिसेयो होदि। }

< उसी (द्वितीय) गुणहानिके द्वितीय निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्य साधिक तीन गुणहानिस्थानान्तर कालसे अपहृत होता है। यथा -- एक कम निषेकभागहार प्रमाण गोपुच्छविशेषोंको ग्रहणकर यदि एक प्रक्षेपशलाका प्राप्त है, तो तीन गुणहानि मात्र गोपुच्छविशेषोंसे कितनी प्रक्षेपशलाकाएँ प्राप्त होंगी? एक प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर इतना होता है -- २४/१५x१ =८/५। अब इसको समच्छेद करके तीन गुणहानियोंमें मिलानेपर इतना होता है -- २४+८/५ = १२८/५। इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर द्वितीय निषेक आता है -- ३०७२/ १२८/५। इस प्रकार द्वितीय गुणहानिका अर्ध भाग समाप्त होनेतक ले जाना चाहिये।

पश्चात् उसके आगेके निषेकप्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह चार गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। यथा -- तीन गुणहानि मात्र क्षेत्रको स्थापित कर पूर्वके ही समान चार फालियाँ करके उनमेंसे तीन फालियोंसे वहाँका निषेक होता है। अतः चतुर्थ फालि अधिक है। अब इस अधिक फालिको उसके प्रमाणसे करते हैं -- निषेकभागहारके तीन चतुर्थ भाग मात्र गोपुच्छविशेषोंको ग्रहण कर यदि वहाँका एक निषेक प्राप्त होता है, तो एक फालि मात्र गोपुच्छविशेषोंमें क्या प्राप्त होगा, इस प्रकार प्रमाणसे फलगुणित इच्छाको अपवर्तित करनेपर इतना होता है -- ८। इसको तीन गुणहानियोंमें मिलानेपर चार गुणहानियाँ होती हैं -- २४+८ = ३२। इसका सब द्रव्यमें भाग देनेपर वहाँका (द्वि०गु०हा० का पाँचवाँ) निषेक होता है -- ३०७२/३२ = १६। इस प्रकार जानकर द्वितीय गुणहानिके अन्तिम समयतक ले जाना चाहिये।>

{ पुणो तदियगुणहाणिपढमणिसेयपमाणेण अवहिरिज्जमाणे छगुणहाणिट्ठाणंतरपमाणेण अवहिरिज्जदि। तं जहा -- तिण्णिगुणहाणिक्खेत्ते मज्झे पाडिय एगअद्धस्सुवरि बिदियअद्धे जोएदूण ** (प्रतिषु 'लोएदूण' इति पाठः।) ड्डविदे छगुणहाणीयो होंति। अधवा, बेगुणहाणीयो चडिदाओ त्ति बे रूवे विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भत्थे कदे चत्तारि रूवाणि उप्पज्जंति। पुणो तेहि दिवड्ढगुणहाणीए गुणिदाए भागहारो छगुणहाणिमेत्तो होदि ४८। पुणो एदाहि सव्वदव्वे भागे हिदे इच्छिदणिसेयो आगच्छदि। }

<   तृतीय गुणहानि सम्बन्धी प्रथम निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह छह-गुणहाणिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। यथा -- तीन गुणहानिप्रमाण क्षेत्रको मध्यमें फाड़कर एक अर्ध भागके ऊपर द्वितीय अर्ध भागको जोड़कर स्थापित करनेपर छह गुणहानियाँ होती हैं। अथवा, चूँकि दो गुणहानियाँ चढ़े हैं अतः दो अंकोंका विरलन करके दुगुणा कर परस्पर गुणित करनेपर चार अंक उत्पन्न होते हैं। पश्चात् उनके द्वारा डेढ़ गुणहानियोंको गुणित करनेपर भागहार छह गुणहानिप्रमाण होता है -- १२x४ = ४८ = ८x६। इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर अभिष्ट निषेक प्राप्त होता है -- ३०७२/४८ = ६४।   >

{   पुणो तिस्से गुणहाणीए बिदियणिसेयपमाणेण सव्वदव्वे अवहिरिज्जमाणे सादिरेयछगुणहाणिट्ठाणंतरेण कालेण अवहिरिज्जदि। एत्थ तेरासियकमेण लद्धपक्खेवरूवाणि ४८। १५। पुणो एदम्मि सरिसछेदं कादूण छसु गुणहाणीसु पक्खित्ते सादिरेयछगुणहाणीयो होंति। ७६८। १५ ** (अ-आ-ता प्रतिषु '७६८। ५। ' एवंविधात्र संदृष्टिरस्ति।)। पुणो एदाहि सव्वदव्वे भागे हिदे बिदियणिसेयो आगच्छदि। एवं जाणिदूण णेदव्वं जाव अग्गट्ठिदिभागहारो त्ति। णवरि अग्गट्ठिदिभागहारो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो असंखेज्जओसप्पिणि ** (अ प्रतौ 'भागो असंखेज्जाओसप्पणि', आ-का प्रत्योः 'भागो असंखेज्जासंखेज्जओसप्पिणि', ता प्रतौ 'भागो असंखेज्जाओ (संखेज्जाओ) ओसप्पिणि' इति पाठः।)-उस्सप्पिणिमेत्तो। तस्स पमाणमेदं ३०७२। ९ **(म प्रति पाठोऽयम्। अ-आ-का प्रतिषु ३०७३ इति पाठः।) एदेण समयपबद्धे भागे हिदे चरिमणिसेयो आगच्छदि। एवं भागहारपरूवणा समत्ता।   }

<   उक्त गुणहानिके द्वितीय निषेकके प्रमाणसे सब द्रव्यको अपहृत करनेपर वह साधिक छह गुणहानिस्थानान्तरकालसे अपहृत होता है। यहाँ त्रैराशिकक्रमसे प्राप्त प्रक्षेप अंक ये हैं -- ४८/१५। इनको समच्छेद करके छह गुणहानियोंमें मिलानेपर साधिक छह गुणहानियाँ होती हैं -- ५२०/१५ + ४८/१५ = ७६८/१५ = ५१ $^{१/५}$ । इनका सब द्रव्यमें भाग देनेपर तृतीय गुणहानिका द्वितीय निषेक आता है -- ३०७२/ $^{७६८/१५}$ = ६०। इस प्रकार जानकर अग्रस्थिति भागहार तक ले जाना चाहिये। विशेष इतना है कि अग्रस्थिति भागहार अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है जो

असंख्यात अवसर्पिणी-उत्सर्पिणियोंके बराबर है। उसका प्रमाण यह है ३०७२/९। इसका समयप्रबद्धमें भाग देनेपर अन्तिम निषेक प्राप्त होता है -- ३०७२ / ३०७२/९ = ९। इस प्रकार भागहार प्ररूपणा समाप्त हुई। >

{ पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं सव्वट्ठिदिपदेसग्गस्स केवडियो भागो? असंखेज्जदिभागो, दिवड्ढगुणहाणीए खंडिदे तत्थ एगखंडमेत्तं ति वुत्तं होदि। एवं णेदव्वं जाव पढमगुणहाणिचरिमणिसेगो त्ति। बिदियगुणहाणिपढमणिसेगो सव्वट्ठिदिपदेसग्गस्स केवडिओ भागो? असंखेज्जदिभागो। को पडिभागो? तिण्णि गुणहाणीयो। एवं जाणिदूण णेदव्वं जाव चरिमगुणहाणिचरिमणिसेगो त्ति। एवं भागाभागपरूवणा समत्ता। }

< प्रथम स्थितिका प्रदेशपिण्ड समस्त स्थितियोंके प्रदेशपिण्डके कितनेवें भाग प्रमाण हैं? उनके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। समस्त स्थितियोंके प्रदेशपिण्डमें डेढ़ गुणहानिका भाग देनेपर जो प्राप्त हो (३०७२/१२ = २५६) उतने मात्र वह है, यह उसका अभिप्राय है। इस प्रकार प्रथम गुणहानिके अन्तिम निषेक तक ले जाना चाहिये। द्वितीय गुणहानिका प्रथम निषेक समस्त स्थितियोके प्रदेशपिण्डके कितनेवें भागप्रमाण है? वह उसके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? प्रतिभाग तीन गुणहानियाँ हैं। इस प्रकार जानकर अन्तिम गुणहानिके अन्तिम निषेक तक ले जाना चाहिए। इस प्रकार भागाभाग प्ररूपणा समाप्त हुई। >

{ सव्वत्थोवं चरिमाए ट्ठिदीए पदेसग्गं ९। पढमाए ट्ठिदीए पदेसग्गमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ता किंचूणण्णोण्णब्भत्थरासी। तस्स पमाणमेदं २५६। ९ ** (का-ता प्रत्योः २५६। ४। एवंविधात्र संदृष्टिरस्ति।)। एदेण चरिमणिसेगे गुणिदे पढमणिसेगो होदि। २५६। अजहण्णअणुक्कस्सदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? सादिरेगेगरूवपरिहीणदिवड्ढगुणहाणी। किं कारणं? रूवूणदिवड्ढगुणहाणिसलागाहि पढमणिसेगे गुणिदे पढमणिसेयवदिरित्तउवरिमसव्वट्ठिदिदव्वं होदि २८१६। पुणो एदम्मि चरिमट्ठिदिदव्वेण विणा इच्छिज्जमाणे रूवूणदिवड्ढगुणहाणीए एगरूवस्स असंखेज्जदिभागमवणिय पढमणिसेगे गुणिदे अजहण्णअणुक्कस्सदव्वं होदि २८०७। अपढमं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तो विसेसो?

उक्कस्सट्ठिदिदव्वमेत्तो २८१६। अणुक्कस्सं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तो विसेसो? चरिमणिसेगेणूणपढमणिसेगमेत्तो। सव्वासु ट्ठिदीसु पदेसग्गं विसेसाहियं। केत्तियमेत्तेण? चरिमट्ठिदिदव्वमेत्तेण। एवं णिसेयपरूवणा समत्ता। }

< अन्तिम स्थितिका प्रदेशपिण्ड सबसे स्तोक (९) है। प्रथम स्थितिका प्रदेशपिण्ड उससे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? गुणकार पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र कुछ कम अन्योन्याभ्यस्त राशि है। उसका प्रमाण यह है -- २५६/९। इसके द्वारा अन्तिम निषेकको गुणित करनेपर प्रथम निषेक होता है -- २५६/९ x ९ = २५६। उससे अजघन्यानुत्कृष्ट द्रव्य असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? गुणकार साधिक एक अंकसे हीन डेढ़ गुणहानियाँ है।

शंका -- इसका कारण क्या है?

समाधान -- इसका कारण यह है कि एक कम डेढ़गुणहानिशलाकाओंसे प्रथम निषेकको गुणित करनेपर प्रथम निषेकसे रहित अग्रिम सब स्थितियोंके द्रव्यका प्रमाण होता है -- [(२५६ x (१२-१) = २८१६ = (३०७२-२५६)]

अब यदि यह द्रव्य अन्तिम स्थितिके द्रव्यसे रहित अभीष्ट है, तो एक कम डेढ़ गुणहानिमेंसे एक अंकके असंख्यातवें भागको घटाकर शेषसे प्रथम निषेकको गुणित करनेपर अजघन्य अनुत्कृष्ट द्रव्यका प्रमाण होता है -- १२-१ = ११; ११-९/२५६ = १० २४७/२५६; २५६x२८०७/२५६ = २५६। इसकी अपेक्षा प्रथम स्थितिसे हीन सब द्रव्य विशेष अधिक है। विशेष कितना है? वह उत्कृष्ट अर्थात् अन्तिम स्थितिके द्रव्यके बराबर है -- २८०७+९ = २८१६। इससे अनुत्कृष्ट द्रव्य विशेष अधिक है। विशेष कितना है? वह अन्तिम निषेकसे हीन प्रथम निषेकके बराबर है -- (२५६-९ = २४७; २८१६+२४७ = ३०६३)। इससे सब स्थितियोंमें प्रदेशाग्र विशेष अधिक है। कितने मात्र विशेषसे वह अधिक है? वह अन्तिम स्थितिके द्रव्यप्रमाणसे अधिक है -- (३०६३+९ = ३०७२) इस प्रकार निषेकप्ररूपणा समाप्त हुई। >

{ आबाहाकंडयपरूवणदाए।।१२१।। }

< आबाधाकाण्डक प्ररूपणाका अधिकार है।।१२१।। >

{ किमट्ठमाबाधकंडयपरूवणा आगदा? किं सव्वट्ठिदिबंधट्ठाणेसु एक्का चेव आबाहा होदि, आहो अण्णण्णा ** (अ-आ-का प्रतिषु 'अण्णोण्णा', ता प्रतौ 'अण्णा ण' इति पाठः।) होदि त्ति पुच्छिदे एवं होदि त्ति जाणावणट्ठमाबाहाकंडयपरूवणा आगदा। एत्थ तिण्णि अणुयोगद्दाराणि परूवणा पमाणमप्पाबहुअं चेव। पमाणप्पाबहुआणं संभवो होदु णाम, सुद्धसिद्धत्तादो। सुत्तम्मि असंतीए परूवणाए कधमेत्थ संभवो? ण एस दोसो, परूवणाए विणा पमाणप्पाबहुआणमणुववत्तीदो। तत्थ ताव सुत्तेण सूचिदपरूवणा वुच्चदे। तं जहा -- चोदसण्णं जीवसमासाणं अत्थि आबाहाकंडयाणि च। आबाहाकंडयपरूवणाए कधमाबाहाट्ठाणाणि वुच्चंति? ण, आबाहाकंडयपरूवणाए आबाहाट्ठाणाविणाभावेण देसामासियत्तमावण्णाए आबाहाट्ठाणपरूवणं पडि विरोहाभावादो। चरिमसमए णिरुद्धे उक्कस्सट्ठिदीदो। }

< शंका -- आबाधाकाण्डक प्ररूपणाका अवतार किसलिए हुआ है?

समाधान -- सब स्थितिबन्धस्थानोंमें क्या एक ही आबाधा है, अथवा अन्य-अन्य हैं, ऐसा पूछनेपर 'इस प्रकारकी आबाधा व्यवस्था है' यह जतलानेके लिए आबाधाकाण्डक प्ररूपणाका अवतार हुआ है।

इस आबाधाकाण्डकप्ररूपणामें तीन अनुयोगद्वार हैं -- प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व।

शंका -- प्रमाण और अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारोंकी सम्भावना भले ही हो, क्योंकि, वे सूत्रसे सिद्ध हैं। परन्तु सूत्रमें न पाये जानेवाले प्ररूपणा अनुयोगद्वारकी सम्भावना यहाँ कैसे हो सकती है?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, प्ररूपणाके विना प्रमाण और अल्पबहुत्वका कथन बन ही नहीं सकता।

उनमें पहले सूत्रसे सूचित प्ररूपणा अनुयोगद्वारका कथन करते हैं। वह इस प्रकार है -- चौदह जीवसमासोंके आबाधाकाण्डक और आबाधास्थान होते हैं।

शंका -- आबाधाकाण्डक प्ररूपणामें आबाधास्थानोंका कथन क्यों किया जा रहा है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि आबाधाकाण्डकप्ररूपणाका आबाधास्थानप्ररूपणाके साथ अविनाभाव सम्बन्ध है, अतः आबाधास्थानप्ररूपणाके प्रति देशामर्शक भावको प्राप्त हुई आबाधाकाण्डकप्ररूपणामें आबाधास्थानोंका करना विरुद्ध नहीं है। >

< पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणं चउरिंदियाणं तीइंदियाणं बीइंदियाणं एइंदियबादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्तयाणं सत्तण्णं कम्माणमाउववज्जाणमुक्कस्सियादो ट्ठिदीदो समए समए पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तमोसरिदूण एयमाबाहाकंडयं करेदि। एस कमो जाव जहण्णिया ट्ठिदि त्ति ** (मोत्तूण आउगाइं समए समए आबाहहाणीए । पल्लासंखियभागं कंडं कुण अप्पबहुमेसिं।। क. प्र. १, ८५.) ।।१२२।। >

< संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और बादर व सूक्ष्म एकेन्द्रिय इन पर्याप्त व अपर्याप्त जीवोंके आयुको छोड़ शेष सात कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थितिसे समय समयमें पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र नीचे उतरकर एक आबाधाकाण्डकको करता है। यह क्रम जघन्य स्थिति तक है।। १२२।। >

{ समए समए इदि आबाधाए एगेगसमए इदि वुत्तं होदि। उक्कस्साबाहाए हेट्ठा पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तमोसरिदूण एयमाबाहाकंडयं करेदि। आबाहचरिमसमयं णिरुंभिदूण उक्कस्सियं ट्ठिदिं बंधदि। तत्तो समयूणं पि बंधदि ** (ता प्रतौ 'समऊण बंधदि' इति पाठः।) । एवं दुसमयूणादिकमेण णेदव्वं जाव पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेणूणट्ठिदि त्ति। एवमेदेण आबाहाचरिमसमएण बंधपाओग्गट्ठिदिविसेसाणमेगमाबाहाकंडयमिदि सण्णा त्ति वुत्तं होदि। आबाधाए दुचरिमसमयस्स णिरुंभणं कादूण एवं चेव बिदियमाबाहाकंडयं परूवेदव्वं। आबाहाए तिचरिमसमयणिरुंभणं कादूण पुव्वं व तदिओ आबाहाकंडओ परूवेदव्वो। एवं णेयव्वं जाव जहण्णिया ट्ठिदि त्ति। एदेण सुत्तेण एगाबाहाकंडयस्स पमाणपरूवणा कदा। }

< सूत्रमें 'समए समए' ऐसा कहनेसे आबाधाके एक एक समयमें, ऐसा अभिप्राय समझना चाहिये। उत्कृष्ट आबाधाके अन्तिम समयकी विवक्षा होनेपर उत्कृष्ट स्थितिसे पल्योपमके

असंख्यातवें भाग मात्र नीचे उतर कर एक आबाधाकाण्डकको करता है। आबाधाके अन्तिम समयको विवक्षित करके उत्कृष्ट स्थितिको बाँधता है। उससे एक समय कम भी स्थितिको बाँधता है। इस प्रकार दो समय कम इत्यादि क्रमसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे रहित स्थिति तक ले जाना चाहिये। इस प्रकार आबाधाके अन्तिम समयमें बन्धके योग्य स्थितिविशेषोंकी एक आबाधाकाण्डक संज्ञा है, यह अभिप्राय है। आबाधाके द्विचरम समयकी विवक्षा करके इसी प्रकारसे द्वितीय आबाधाकाण्डककी प्ररूपणा करना चाहिये। आबाधाके त्रिचरम समयकी विवक्षा करके पहलेके ही समान तृतीय आबाधाकाण्डककी प्ररूपणा करना चाहिये। इस प्रकार जघन्य स्थिति तक यही क्रम जानना चाहिये। इस सूत्रके द्वारा एक आबाधाकाण्डकके प्रमाणकी प्ररूपणा की गयी है। >

{ संपहि देसामासियत्तमावण्णेण एदेण सुत्तेण सूचिदाणमाबाहाट्ठाणाणमाबाहाकंडयसलागाणं च पमाणपरूवणा कीरदे। तं जहा -- सण्णिपंचिंदियपज्जत्ताणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंडयाणि च दो वि आबाहाकंडयाणि च दो वि अंतोमुहुत्तमेत्ताणि। असण्णिपंचिंदिय-चउरिंदिय-तीइंदिय-बीइंदियाणमट्ठण्हं जीवसमासाणमाबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंडयसलागाओ च आवलियाए संखेज्जदि**(आ प्रतौ 'असंखे', ता प्रतौ 'असंखे०' इति पाठः।)भागमेत्ताणि। चदुण्णमेइंदियाणं आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंडयाणि च आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। }

< अब देशामर्शक भावको प्राप्त हुए इस सूत्रके द्वारा सूचित आबाधास्थानों और आबाधाकाण्डकशलाकाओंके प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही संख्यात वर्ष प्रमाण हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही अन्तर्मुहूर्त प्रमाण हैं। असंज्ञी पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और द्वीन्द्रिय (पर्याप्तक-अपर्याप्त) इन आठ जीवसमासोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डकशलाकाएँ आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। चार एकेन्द्रिय जीवोंके आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक आवलीके असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। >

{ आउअस्स आबाहाकंदयपरूवणा किमट्ठं ण कदा? ण एस दोसो, आउअस्स इमा ट्ठिदी एदीए चेव ** (ता प्रतौ 'इमा ट्ठिदीए चेव' इति पाठः।) आबाहाए बज्झदि त्ति णियमाभावादो। पुव्वकोडितिभागमाबाहं काऊण तेत्तीसाउअं बंधदि, समऊणतेत्तीसं पि बंधदि, एवं दुसमयूण ** (अ-आ-का प्रतिषु 'दुसमऊणा') तिसमयूणादिकमेण पुव्वकोडितिभागाबाहं धुवं कादूण णेदव्वं जाव बंधखुद्दाभवग्गहणं ति। पुणो एदे चेव आउवबंधवियप्पा पुव्वकोडितिभागे ** (अ-आ-का प्रतिषु 'पुव्वकोडिभागे') समऊणे आबाधत्तणेण णिरुद्धे वि होंति। एवं दुसमयूणादिक**(ता प्रतौ 'दुसमयादि --')मेण णेदव्वं जाव असंखेयद्धा त्ति। जेणेवमणियमो तेण आउअस्स आबाहकंडयपरूवणा ण कदा। ण च आबाहाकंडयाणि णत्ति त्ति आबाहाट्ठाणाणमसंभवो, तदभावे लिंगाभावादो। तदो आउअस्स णत्थइ आबाहाकंडयाणि त्ति सिद्धं। }

< शंका -- यहाँ आयु कर्मके आबाधाकाण्डकोंकी प्ररूपणा किसलिये नहीं की गयी?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, कारण कि आयुकी यह स्थिति इसी आबाधामें बँधती है, ऐसा कोई नियम नहीं है। पूर्वकोटिके त्रिभागको आबाधा करके तैंतीस सागरोपम प्रमाण आयुको बाँधता है, एक समय कम तैंतीस सागरोपम प्रमाण आयुको भी बाँधता है; इस प्रकार पूर्वकोटिके त्रिभाग रूप आबाधाको ध्रुव करके दो समय कम, तीन समय कम इत्यादि क्रमसे बन्ध क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण स्थिति तक ले जाना चाहिये। पूर्वकोटिके एक समय कम त्रिभागको आबाधा रूपसे विवक्षित करनेपर भी ये ही आयुबन्धके विकल्प होते हैं। इसी प्रकार दो समय कम, तीन समय कम इत्यादि क्रमसे असंख्येयाद्धा काल प्रमाण आबाधा तक ले जाना चाहिये। जिस कारण यहाँ कोई ऐसा नियम नहीं है, इसलिये आयुके आबाधाकाण्डकोंकी प्ररूपणा नहीं की गयी।

आबाधाकाण्डक चूँकि नहीं है, इसलिये आबाधास्थान असम्भव हों, ऐसी कोई बात नहीं है; क्योंकि, उनके अभावमें कोई हेतु नहीं है। इस कारण आयुके आबाधाकाण्डक नहीं हैं, यह सिद्ध है। >

{ एत्थ अप्पाबहुगपरूवणा किण्ण कीरदे? ण एस दोसो, उवरि भण्णमाणअप्पाबहु अणुयोगद्दारेण तदवगमादो। एवमाबाधाकंडयपरूवणा समत्ता। }

< शंका -- अल्पबहुत्वप्ररूपणा क्यों नहीं की जाती?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, उसका ज्ञान आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारसे हो जाता है। इस प्रकार आबाधाकाण्डक प्ररूपणा समाप्त हुई। >

{ अप्पाबहुएत्ति।।१२३।। }

< अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारका अधिकार है।।१२३।।>

{ जं तं चउत्थमणुयोगद्दारमप्पाबहुगमिदि तं ** (आ प्रतौ 'तं' इति नोपलभ्यते।) वत्तइस्सामो त्ति भणिदं होदि। }

< जो वह चौथा अनुयोगद्वार है उसको कहते हैं, यह अभिप्राय है।>

{ पंचिंदियाणं सण्णीणं मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तापज्जत्ताणं सत्तण्हं कम्माणमाउअवज्जाणं सव्वत्थोवा जहण्णिया आबाहा ** (एतेषां दशानां स्थानानामल्पबहुत्वमुच्यते -- तत्र संज्ञिापंचेन्द्रियेषु पर्याप्तेषु वा बन्धकेषु आयुर्वर्जानां सप्तानां कर्मणां सर्वस्तोका जघन्यबाधा (१) सा च अन्तर्मुहूर्तप्रमाणा। क. प्र. (मलय. टीका) १, ८६.) ।।१२४।। }

< संज्ञी मिथ्यादृष्टि पर्याप्तक व अपर्याप्तक पंचेन्द्रिय जीवोंके आयुको छोड़कर शेष सात कर्मोंकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है।।१२४।। >

{ कुदो? संखेज्जावलियमेत्ता होदूण अंतोमुहुत्तपमाणत्तादो। }

<	इसका कारण यह है कि उक्त आबाधा संख्यात आवली प्रमाण हो करके अन्तर्मुहूर्त मात्र है।	>

{	आबाहाट्ठाणाणि आबाहाकंडयाणि च दो वि तुल्लाणि ** (आ प्रतौ 'च तुल्लाणि दो वि संखेज्जगुणाणि' इति पाठः। ततोऽऽबाधास्थानानि कंडकस्थानानि चासंख्येयगुणानि। तानि तु परस्परं तुल्यानि। तथा हि -- जघन्यामाबाधामादिं कृत्वोत्कृष्टाऽऽबाधाचरमसमयमभिव्याप्य यावन्तः समयाः प्राप्यन्ते तावन्त्याबाधास्थानानि भवन्ति। तद्यथा -- जघन्याऽऽबाधा एकमाबाधास्थानम्। सैव समयाधिका द्वितीयम्। द्विसमयाधिका तृतीयम्। एवं तावद्वाच्यं यावदुत्कृष्टाबाधाचरमसमयः एतावन्त्येव चाबाधाकंडकानि, जघन्याबाधात् आरभ्य समयं समयं प्रति कंडकस्य प्राप्यमाणत्वात्। एतच्च प्रागेवोक्तम् (२-३)। क. प्र. (म. टी.) १, ८६.) संखेज्जगुणाणि।।१२५।।	}

<	आबाधास्थान और आबाधाकाण्डक दोनों ही तुल्य संख्यातगुणे हैं।	>

{	कुदो? जहण्णाबाधादो उक्कस्साबाहा संखेज्जगुणा, तेण आबाहाट्ठाणाणि वि संखेज्जगुणाणि चेव। कधं? समऊणजहण्णाबाहाए उक्कस्साबाहादो सोहिदाए आबाहट्ठाणुप्पत्तीदो। कधमाबाहट्ठाणेहि आबाहाकंडयसलागाणं सरिसत्तं? ण एस दोसो, एगेगाबाहट्ठाणस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तट्ठिदिबंधट्ठाणाणमाबाहाकंडयसण्णिदाणं उवलंभेण समाणत्ता।	}

<	चूँकि जघन्य आबाधाकी अपेक्षा उत्कृष्ट आबाधा संख्यातगुणी है, इसीलिये आबाधास्थान भी उससे संख्यातगुणे ही हैं।

शंका -- कैसे?

समाधान -- क्योंकि, उत्कृष्ट आबाधामेंसे एक समय कम जघन्य आबाधाको घटा देनेपर आबाधास्थानोंकी उत्पत्ति होती है।

शंका -- आबाधास्थानोंसे आबाधाकाण्डकशलाकाएँ समान कैसे हैं?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, एक एक आबाधास्थान सम्बन्धी जो पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र स्थितिबन्धस्थान हैं उनकी आबाधाकाण्डक संज्ञा है; अत एव उनके समानता है ही। >

{ उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया ** (तेभ्य उत्कृष्टाबाधा विशेषाधिका, जघन्याबाधायास्तत्र प्रवेशात् (४) क. प्र. (म. टी.) १,८६) ।।१२६।। }

< उनसे उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है।।१२६।। >

{ केत्तियमेत्तेण? समऊणजहण्णाबाहमेत्तेण। }

< शंका -- वह कितने प्रमाणसे अधिक है?

समाधान -- वह एक समय कम जघन्य आबाधाके प्रमाणसे अधिक है। >

{ णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि ** (ततो दलिकनिषेकविधौ द्विगुणहानिस्थानानि असंख्येयगुणानि, पल्योपमप्रथमवर्गमूलासंख्येयभागगतसमयप्रमाणत्वात् (५)। क. प्र. (म. टी.) १, ८६.) ।।१२७।। }

< नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं।।१२७।।>

{ कुदो? उक्कस्साबाहाओ संखेज्जावलियमेत्ताओ होदूण सण्णीसु पज्जत्तएसु संखेज्जवस्साणि अपज्जत्तएसु अतोमुहुत्तं होंति। णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि पुण असंखेज्जवस्साणि होदूण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि। तेण उक्कस्सआबाहादो णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि त्ति जुज्जदे। }

<	कारण कि उत्कृष्ट आबाधाएँ संख्यात आवली प्रमाण हो करके संज्ञी पर्याप्तक जीवोंमें संख्यात वर्ष और अपर्याप्तकोंमें अन्तर्मुहूर्त प्रमाण होती हैं। परन्तु नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यात वर्ष प्रमाण हो करके पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र हैं। अतएव उत्कृष्ट आबाधाकी अपेक्षा नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरोंका होना उचित है।	>

{	एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं ** (तत एकस्मिन् द्विगुणहान्योरन्तरे निषेकस्थानान्यसंख्येयगुणानि, तेषामसंख्येयानि पल्योपमवर्गमूलानि परिमाणमिति कृत्वा (६) क. प्र. (म. टी.)। १, ८६) ।।१२८।।}

<	एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है।।१२८।।>

{	कुदो? असंखेज्जपलिदोवमपढमवग्गमूलपमाणत्तादो।	}

<	क्योंकि वे पल्योपमके असंख्यात प्रथम वर्गमूलके बराबर हैं।	>

{	एयमाबाहाकंदयमसंखेज्जगुणं ** (तेभ्योऽपि अर्थेन कंडक--(पंचसंग्रहे पुनरेतस्य स्थानेऽबाधाकंडकमित्येतदेवोपलभ्यते)मसंख्येयगुणम् (७)। क. प्र. (म. टी.) १,८६) ।।१२९।।	}

<	एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है।।१२९।।>

{	णाणापदेसगुणहाणिसलागाहिअसंखेज्जवस्सपमाणाहि कम्मट्ठिदीए ओवट्टिदाए एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमागच्छदि। उक्कस्साबाहाए संखेज्जवस्समेत्ताए अंतोमुहुत्तमेत्ताए च सग-सगुक्कस्सट्ठिदीए ओवट्टिदाए जेणेगमाबाहाकंडयपमाणं होदि, तेणेगपदेसगुणहाणिट्ठआणंतरादो एगमाबाहाकंडयमसंखेज्जगुणमिदि घेत्तव्वं।	}

<	असंख्यात वर्ष प्रमाण नानाप्रदेशगुणहानिशलाकाओंका कर्मस्थितिमें भाग देनेपर एकगुणहानिस्थानान्तर लब्ध होता है। संख्यात वर्ष मात्र व अन्तर्मुहूर्त मात्र उत्कृष्ट आबाधाका अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थितिमें भाग देनेपर चूँकि एक आबाधाकाण्डकका प्रमाण होता है, अत एव एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरकी अपेक्षा एक आबाधाकाण्डक असंख्यातगुणा है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। >

{	जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो ** (तस्माज्जघन्यः स्थितिबन्धोऽसंख्येयगुणः, अन्तःसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणत्वात्। संज्ञिपंचेन्द्रिया हि श्रेणिमनारूढा जघन्यतोऽपि स्थितिबन्धमन्तःसागरोपमकोटीकोटीप्रमाणमेव कुर्वन्ति (८)। क. प्र. (म. टी.)१, ८६.) ।।१३०।।	>

<	जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है।।१३०।।	>

{	एगमाबाहाकंडयं णाम पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, जहण्णट्ठिदिबंधो पुण अंतोकोडाकोडिमेत्तसागरोवमाणि। तेण एगाबाहाकंडयादो जहण्णओ ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो जादो। }

<	चूँकि एक आबाधाकाण्डक पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, परन्तु जघन्य स्थितिबन्ध अन्तःकोड़ाकोड़ि सागरोपमों प्रमाण है; अत एव आबाधाकाण्डककी अपेक्षा जघन्य स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा हो जाता है। >

{	ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि ** (ततोऽपि स्थितिबन्धस्थानानि संख्येयगुणानि (९)। क. प्र. (म. टी.) १, ८६)।।१३१।।	}

<	स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं।।१३१।।	>

{ जहण्णट्ठिदिबंधादो उक्कस्सट्ठिदिबंधो जेण संखेज्जगुणो तेण ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि वि संखेज्जगुणाणि चेव, समऊणजहण्णट्ठिदिबंधेणूणउक्कस्सट्ठिदिबंधस्सेव ** (तेभ्य उत्कृष्ट स्थितिर्विशेषाधिका, जघन्यस्थितेरबाधायाश्च तत्र प्रवेशात्। क. प्र. (म. टी.) १, ८६) ट्ठिदिबंधट्ठाणववएसादो। }

< चूँकि जघन्य स्थितिबन्धकी अपेक्षा उत्कृष्ट स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है, अतः उससे स्थितिबन्धस्थान भी संख्यातगुणे ही होने चाहिये, क्योंकि, एक समय कम जघन्य स्थितिबन्धसे रहित उत्कृष्ट स्थितिबन्धको ही स्थितिबन्धस्थान संज्ञा है। >

{ उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।।१३२।। }

< उत्कृष्ट स्थितिबन्ध उससे विशेष अधिक है।।१३२।। >

{ केत्तियमेत्तेण? समऊणजहण्णट्ठिदिमेत्तेण। }

< कितने मात्रसे वह अधिक है? एक समय कम जघन्य स्थितिबन्धके प्रमाणसे वह अधिक है। >

{ पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणं पज्जत्तयाणमाउअस्स सव्वत्थोवा जहण्णिया आबाहा ** (तथा संज्ञिपंचेन्द्रियेषु वा पर्याप्तकेषु प्रत्येकमायुषो जघन्यबाधा सर्वस्तोका (१)। ततो जघन्यः स्थितिबन्धः संख्येयगुणः। स च क्षुल्लकभवरूपः (२)। ततोऽबाधास्थानानि संख्येयगुणाणि। जघन्यबाधारहितः पूर्वकोटित्रिभाग इति कृत्वा (३)। ततोऽप्युत्कृष्टाबाधा विशेषाधिका जघन्यबाधाया अपि तत्र प्रवेशात् (४)। ततो द्विगुणहानिस्थानान्यसंख्येयगुणानि, पल्योपमप्रथमवर्गमूलासंख्येयभागगतसमयप्रमाणत्वात् (५)। तेभ्योऽप्येकस्मिन् द्विगुणहान्योरन्तरे निषेकस्थानासंख्येयगुणानि (६) । तत्र युक्तिः प्रागुक्ता वक्तव्या। ततः

स्थितिबन्धस्थानान्यसंख्येयगुणानि (७)। तेभ्योऽप्यत्कृष्टः स्थितिबन्धो विशेषाधिकः, जघन्यस्थितेरबाधायाश्च तत्र प्रवेशात् (८)। क. प्र. (म. टी.) १, ८६.) ।।१३३।। }

< संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है ।।१३३।। >

{ कुदो? आउअं बंधिय समयाहियसव्वजहण्णविस्समणकालग्गहणादो। }

< क्योंकि, यहाँ आयुको बाँधकर एक समय अधिक सर्वजघन्य विश्रमणकालका ग्रहण है। >

{ जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो।।१३४।। }

< उससे जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है।।१३४।। >

{ कुदो? खुद्दाभवग्गहणपमाणत्तादो। }

< क्योंकि वह क्षुद्रभवग्रहणके बराबर है। >

{ आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि।।१३५।। }

< उससे आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं।।१३५।। >

{ जहण्णओ ट्ठिदिबंधो णाम अंतोमुहुत्तमेत्तो ** (अ-आ-का प्रतिषु 'मेत्ता' इति पाठः।), आबाहाट्ठाणाणि पुण संखेज्ज ** (प्रतिषु 'असंखेज्ज' इति पाठः।)पमाणपुव्वकोडितिभागमेत्ताणि; तेण जहण्णट्ठिदिबंधादो आबाहाट्ठाणाणं संखेज्जगुणत्तं णव्वदे। }

< जघन्य स्थितिबन्ध अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है, परन्तु आबाधास्थान संख्यात प्रमाण (जघन्य आबाधासे रहित) पूर्वकोटित्रिभाग मात्र हैं; इसीसे जाना जाता है कि जघन्य स्थितिबन्धकी अपेक्षा आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं। >

{ उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया।।१३६।। }

< उनसे उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है।।१३६।। >

{ केत्तियमेत्तेण? समऊणजहण्णाबाहमेत्तेण। }

< कितने प्रमाणसे वह अधिक है? एक समय कम जघन्य आबाधाके प्रमाणसे वह विशेष अधिक है। >

{ णाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतराणि असंखेज्जगुणाणि।।१३७।। }

< नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणे हैं।।१३७।।>

{ पुव्वकोडितिभागं पेक्खदूण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तणाणागुणहाणि-सलागाणमसंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। }

< क्योंकि, पूर्वकोटित्रिभागकी अपेक्षा पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण नानागुणहानिशलाकाओंके असंख्यातगुणत्व पाया जाता है। >

{ एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरमसंखेज्जगुणं।।१३८।। }

< एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर असंख्यातगुणा है। >

{ कुदो? पलिदोवमपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जदिभागमेत्तणाणापदेसगुणहाणिट्ठाणंतरसलागाहि असंखेज्जपलिदोवमवग्गमूलमेत्तएगपदेसगुणहाणीए ओवट्टिदाए असंखेज्जरूवुवलंभादो। }

< क्योंकि, पल्योपम सम्बन्धी प्रथम वर्गमूलके असंख्यातवें भाग मात्र नानाप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरशलाकाओंका पल्योपमके असंख्यात वर्गमूलोंके बराबर एकप्रदेशगुणहानिमें भाग देनेपर असंख्यात अंक पाये जाते हैं। >

{ ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि।।१३९।। }

< स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं।।१३९।। >

{ कुदो? एयपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरं णाम पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो, ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि पुण संखेज्जसागरोवममेत्ताणि पलिदोवमस्सस्सासंखेज्जदिभागो ** (अ-आ-प्रत्योः 'पलिदोवस्स संखे० भागो' इति पाठः।) च; तेण एगपदेसगुणहाणिट्ठाणंतरादो ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि असंखेज्जगुणाणि त्ति ** (ता प्रतौ 'असंखेज्जगुणा त्ति' इति पाठः।) घेत्तव्वं। }

< क्योंकि, एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तर पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है, परन्तु स्थितिबन्धस्थान संख्यात सागरोपम मात्र व पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं; इस कारण एकप्रदेशगुणहानिस्थानान्तरकी अपेक्षा स्थितिबन्धस्थान असंख्यातगुणे हैं, ऐसा ग्रहण करना चाहिये। >

{ उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।।१४०।। }

< उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।।१४०।। >

{ केत्तियमेत्तेण? समऊणजहण्णट्ठिदिबंधमेत्तेण। }

< वह कितने मात्रसे अधिक है? एक समय कम जघन्य स्थितिबन्धके प्रमाणसे वह विशेष अधिक है। >

{ पंचिंदियाणं सण्णीणमसण्णीणमपज्जत्तयाणं चउरिंदियाणं तीइंदियाणं बीइंदियाणं एइंदियबादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तयाण**(प्रतिषु 'सुहुमपज्जत्तयाण' इति पाठः।)माउअस्स सव्वत्थोवा जहण्णिया आबाहा ** (तथा पंचेन्द्रियेषु संज्ञिष्वपर्याप्तेषु चतुरिन्द्रिय-त्रीन्द्रिय-द्वीन्द्रिय-बादरसूक्ष्मैकेन्द्रियेषु च पर्याप्तापर्याप्तेषु प्रत्येकमायुषः सर्वस्तोका जघन्यबाधा (१)। ततो जघन्यः स्थितिबन्धः संख्येयगुणः, स च क्षुल्लकभवरूपः (२)। ततोऽबाधास्थानानि संख्येयगुणानि (३)। ततोऽप्युत्कृष्टाबाधा विशेषाधिका (४)। ततोऽपि स्थितिबन्धस्थानानि संख्येयगुणानि, जघन्यस्थितिन्यूनपूर्वकोटिप्रमाणत्वात् (५)। तत उत्कृष्टः स्थितिबन्धो विशेषाधिकः, जघन्यस्थितेरबाधायाश्च तत्र प्रवेशात् (६)। क. प्र. (म. टी.)१, ८६.) ।।१४१।। }

< संज्ञी व असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकों तथा चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और बादर एवं सूक्ष्म एकेन्द्रिय, इन पर्याप्त-अपर्याप्तोंके आयुकी जघन्य आबाधा सबसे स्तोक है।।१४१।। >

{ आउअं बंधिय समयाहियसव्वजहण्णविस्समणकालग्गहणादो। }

< क्योंकि यहाँ आयुको बाँधकर एक समयसे अधिक सर्वजघन्य विश्रमणकालका ग्रहण है। >

{ जहण्णओ ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो।।१४२।। }

< जघन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है।।१४२।। >

{ कुदो? बंधखुद्दाभवग्गहणादो। }

< क्योंकि, यहाँ बन्धक्षुद्रभवका ग्रहण है। >

{ आबाहाट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि।।१४३।। }

< आबाधास्थान संख्यातगुणे हैं।।१४३।। >

{ सग-सगउक्कस्साउआणं तिभागस्स समऊणजहण्णाबाहाए परिहीणस्स गहणादो। }

< क्योंकि, एक समय कम जघन्य आबाधासे हीन अपनी अपनी उत्कृष्ट आयुओंके त्रिभागका यहाँ ग्रहण है। >

{ उक्कस्सिया आबाहा विसेसाहिया।।१४४।। }

< उत्कृष्ट आबाधा विशेष अधिक है।।१४४।। >

{ केत्तियमेत्तेण? समऊणजहण्णाबाहामेत्तेण। }

< वह कितने मात्र विशेषसे अधिक है? वह एक समय कम जघन्य आबाधा मात्रसे अधिक है। >

{ ट्ठिदिबंधट्ठाणाणि संखेज्जगुणाणि।।१४५।। }

< स्थितिबन्धस्थान संख्यातगुणे हैं।।१४५।। >

{ कुदो? समऊणजहण्णट्ठिदिबंधेणूणपुव्वकोडिग्गहणादो। }

< क्योंकि, एक समय कम जघन्य स्थितिबन्धसे हीन पूर्वकोटिका ग्रहण है। >

{ उक्कस्सओ ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ।।१४६।। }

< उत्कृष्ट स्थितिबन्ध विशेष अधिक है।।१४६।। >

{ केत्तियमेत्तेण? समऊणजहण्णट्ठिदिबंधमेत्तेण। }

< वह कितने मात्रसे अधिक है? वह एक समय कम जघन्य स्थितिबन्धके प्रमाणसे विशेष अधिक है। >